

>

Title: Regarding decline in coal output in India.

श्रीपी. पी. चौधरी: अध्यक्ष महोदय, जिस महत्वपूर्ण मुद्दे पर मैंने 27 तारीख को सप्लीमेंट्री मांगी थी, I think, due to paucity of time, I could not be given time at that time. मेरा कोल आउटपुट के बारे में सवाल है। आज देश में करीब 1,71,000 करोड़ रुपये का कोल हम इम्पोर्ट कर रहे हैं। देश में कोल खादानों की कोई कमी नहीं है। लेकिन सवाल यह है कि कोल जो अभी डिक्लाइन हुआ है, उसका आउटपुट जो डिक्लाइन हुआ है, वह हुआ ही है, वह इनक्रीजन ही हो रहा है। इनक्रीजन करने के जो कारण हैं, उसका समाधान भी हमारे पास है। मुझे लगता है कि कोल ब्लॉक का डिजाइन और माइनिंग प्लान छोटी-छोटी खादानों के बने हुए हैं। उसमें जो इक्वीपमेंट्स यूज हो रहे हैं, वे कन्वेंशनल इक्वीपमेंट्स हैं। जैसे 35 टन के डम्पर हैं या 45 टन के ऐक्सकेवेटर्स हैं, जबकि 27 तारीख को मंत्री जी का जो जवाब था, उसमें उन्होंने कहा कि हम हेवी अर्थ मूविंग मशीन यूज करेंगे, जिसके साथ 240 टन के डम्पर लगे हुए हैं। मेरा मानना है कि जो कोल ब्लॉक्स हैं, उनकी डिजाइन और माइनिंग प्लान जब तक हेवी अर्थ मूविंग के अनुसार नहीं करेंगे, तब तक हेवी अर्थ मूविंग मशीन छोटी माइन्स में काम नहीं कर सकती। यही कारण है कि उसका आउटपुट इनक्रीजन ही हो रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि हम और भी ज्यादा कोल ब्लॉक्स अलॉट करेंगे। सवाल अलॉट करने का नहीं है। सवाल यह है कि एग्जिस्टिंग माइन्स जो हैं, उसकी साइज जब तक हम बड़ी नहीं करेंगे, क्योंकि अभी जो मशीन्स आई हैं, वे बड़ी-बड़ी आई हैं। वे मशीन्स बड़े पिट में ही काम कर सकती हैं, छोटे ब्लॉक में काम नहीं कर सकती। उसके कारण नुकसान हो रहा है। कोल प्रोडक्शन आउटपुट कम हो रहा है और इम्पोर्ट 1,71,000 करोड़ रुपये का कम हो सकता है। जो कोल माइन्स हैं,

उसका डिजाइन वगैरह बढ़िया रखें । एफडीआई जो है, जो फॉरनर्स हैं,
वह एफडीआई डायरेक्ट इसलिये नहीं लारहे हैं, क्योंकि पिट्स जो है, वे छोटे हैं ।
कॉस्ट ऑफ प्रोडक्शन ज्यादा बढ़ती है,
सेफ्टी भी कम रहती है और पॉल्यूशन का भी कारण बनता है । बहुत-बहुत धन्यवाद ।